● **पढ़ो और गाओ :**

१०. (अ) दो गजलें

–डॉ. कुँअर बेचैन

जन्म : १ जुलाई १९४२, मुरादाबाद (उ.प्र.) **रचनाएँ :** शामियाने काँच के, धूप चली मीलों तक, शब्द एक लालटेन, पर्स पर तितली, मरकत द्वीप की नीलमणि आदि **परिचय :** कुँअर जी विविध सम्मान-पुरस्कारों से पुरस्कृत तथा गजलकारों में प्रमुख हस्ताक्षर हैं। प्रस्तुत गजलों में बेचैन जी ने बेटियों के महत्त्व और जिंदगी जीने के तरीके को बड़े ही मार्मिक एवं सुंदर ढ़ंग से दर्शाया है।

बेटियाँ

हैं ये पूजाघर का आँगन बेटियाँ
हैं ऋचाओं जैसी पावन बेटियाँ।

अब तो सारी दुनिया ही कहने लगी
जग की दौलत से बड़ा धन बेटियाँ।

सामने आईं तो याद आ जाएगा
हैं बड़े-बूढ़ों का बचपन बेटियाँ।

दो घरों की छबि बनाने के लिए
दो घरों की एक दर्पन बेटियाँ।

अपनी मेहनत से, बना लेती हैं ये
एक जंगल को भी उपवन बेटियाँ।

खुश्क रेगिस्तान-सी है जिंदगी
और रिमझिम मस्त सावन बेटियाँ।

जन्म से ही साथ लाती हैं 'कुँअर'
फूल-सा तन, मोम-सा मन बेटियाँ।

असर

जिंदगी की राहों में, खुशबुओं के घर रखना
आँख में नई मंजिल, पाँव में सफर रखना।

सिर्फ छाँव में रहकर फूल भी नहीं खिलते
चाँदनी से मिल कर भी, धूप की खबर रखना।

दाग सिर्फ औरों के, देखने से क्या हासिल
अपना आईना है तू, खुद पे भी नजर रखना।

लोग जन्म लेते ही, पंख काट देते हैं
है बहुत-बहुत मुश्किल, बाजुओं में खम रखना।

ये न हो कि तेरे ये शब्द अर्थ खो बैठें
ऐ 'कुँअर' तू सच कहकर, बात में असर रखना।

❑ उचित हाव-भाव, लय-ताल के साथ उपरोक्त गजलों का गायन करें। विद्यार्थियों से सामूहिक, गुट में अनुकरण गायन कराएँ। प्रश्नोत्तर एवं चर्चा के माध्यम से गजलों के भाव स्पष्ट करें। विद्यार्थियों को कोई गजल गाने के लिए प्रेरित करें।

● **पढ़ो और समझो :**

(ब) एक मटका बुद्धि

इस कहानी में कहानीकार ने बुद्धिबल एवं चतुराई के महत्त्व को स्थापित करने का प्रयास किया है ।

बादशाह अकबर ने अपने दरबार में कुछ प्रतिभाशाली और बुद्धिमान लोगों को नियुक्त किया था, जो 'नवरत्न' अर्थात नौ रत्नों के नाम से जाने जाते थे । इन सबमें बहुमूल्य रत्न थे बीरबल, वे एक हाजिर जवाब मंत्री थे। एक बार श्रीलंका के राजा, बादशाह अकबर के दरबारियों की बुद्धि की परीक्षा लेना चाहते थे, इसलिए उन्होंने अपना दूत इस विशेष कार्य के लिए अकबर के दरबार में भेजा ।

''हे महान राजा! श्रीलंका के राजा ने अपनी शुभकामनाएँ भेजी हैं । उन्होंने आपके सम्मान तथा स्नेह के प्रतीक बहुमूल्य उपहार भेजा है। बादशाह सलामत, मैं यहाँ एक विशेष अनुरोध लेकर आया हूँ,'' दूत ने कहा । ''आपका दरबार सर्वश्रेष्ठ बुद्धिवाले दरबारियों के कारण प्रसिद्ध है । श्रीलंका के राजा ने अनुरोध किया है कि आप इस बुद्धिमत्ता का छोटा-सा अंश हमें भी दे दें । वे चाहते हैं कि 'एक मटका बुद्धि' उनके लिए भेज दें,'' दूत ने निवेदन किया ।

इस प्रकार के अजीब अनुरोध के कारण दरबारी बहुत चिंतित हो गए । उन्होंने घबराकर एक-दूसरे की ओर देखा । ''हमने जो सुना है वह क्या ठीक है? एक मटका बुद्धि ?'' एक दरबारी ने गुस्से से कहा । ''यह अनुरोध तो बिलकुल बे-सिर-पैर का है ! श्रीलंका के राजा का दिमाग जरूर खराब हो गया है जो उन्होंने इस तरह का मूर्खतापूर्ण अनुरोध किया है ।'' सभी दरबारी उसके इस कथन से सहमत थे ।

''मुझे लगता है इस दरबार में एक बुद्धिमान व्यक्ति है जो कुछ-न-कुछ युक्ति अवश्य निकाल सकता है,'' एक मंत्री ने बीरबल की ओर देखते हुए कहा । वह दरबारी बीरबल से बहुत ईर्ष्या करता था । उसे लगा कि बीरबल को नीचा दिखाने का वह सही अवसर था । उधर राजदूत इस बात का खूब मजा ले रहा था कि उसने अकबर के दरबार में तनाव तथा गड़बड़ी की सृष्टि कर दी थी ।

बादशाह अकबर भी अपने अन्य दरबारियों की तरह इस अजीब अनुरोध से भौचक्के रह गए । उन्होंने बीरबल से कहा, ''तुम्हारे पास सभी समस्याओं का हल होता है और मुझे आशा है कि तुम इस समस्या को भी सुलझा सकोगे ।'' बीरबल ने अकबर के सामने अपना सिर झुकाया और कहा, ''बादशाह सलामत, हमारे राज्य में काफी बुद्धि है और मुझे विश्वास है कि हम 'बुद्धि भरा मटका' श्रीलंका भिजवा ही देंगे ।'' दूत ने कहा, ''जैसे ही मुझे 'बुद्धि भरा मटका' मिल जाएगा मैं अपने देश के लिए प्रस्थान करूँगा ।''

''बादशाह सलामत 'बुद्धि भरा मटका' तैयार करने में थोड़ा समय लगेगा,'' बीरबल ने अकबर को बताया। दूत अपनी धूर्तता पर मुस्कराता हुआ बोला, ''अच्छी बात है, बादशाह सलामत, मैं इंतजार करूँगा । आपकी सूचना मिलने पर आऊँगा ।''

बीरबल घर वापस आए । उन्होंने अपने माली से खेत में कुछ कुम्हड़ों के बीज बोने को कहा। कुछ समय बाद वे बेलें बड़ी हो गईं और उनमें छोटे-छोटे फल आ गए । बीरबल उन फलों को देखकर बहुत खुश हुए और उन्होंने माली को बुलाया । उन्होंने माली को कुछ मटके दिए और कहा, ''हर मटके में एक कुम्हड़ा बढ़ जाए ऐसे एक-एक मटका लगा दो ।'' उन्होंने माली को विशेष निर्देश दिया कि बेलों की अच्छी तरह से देखभाल करे और कुम्हड़ों को मटकों के अंदर ही बढ़ने दे ।

कुछ सप्ताहों के बाद कुम्हड़े अपने पूरे बड़े आकार

❑ उचित आरोह-अवरोह के साथ किसी परिच्छेद का आदर्श वाचन कराएँ । विद्यार्थियों को कहानी के अंत का अनुमान लगाते हुए मुखर एवं मौन वाचन करने के लिए कहें । इस कहानी में आए निवेदन, प्रश्न और आदेशवाले वाक्य अलग करके लिखवाएँ ।

के हो गए और उनसे मटके पूरी तरह से भर गए थे । बीरबल ने बहुत सावधानी से कुम्हड़ों को मटकों सहित पौधों से अलग कर दिया । उन्होंने बादशाह अकबर को खबर भिजवाई कि 'बुद्धि भरा मटका' तैयार है । अगले दिन बादशाह अकबर ने श्रीलंका के राजदूत को राजदरबार में बुलवाया ।

श्रीलंका के राजदूत को विश्वास था कि बीरबल 'बुद्धि भरा मटका' तैयार करने में सफल नहीं हो सके होंगे । जब सब लोग दरबार में उपस्थित हो गए तो बादशाह अकबर ने कहा, ''बीरबल, राजदूत के लिए 'बुद्धि भरा मटका' लाओ ।'' बीरबल ने अपने सेवक को मटका लाने का इशारा किया । मटके को एक तश्तरी पर रखा गया था तथा एक सुंदर कपड़े से ढँककर लाया गया था । दरबार में चुप्पी छाई थी क्योंकि किसी को विश्वास नहीं हुआ कि राज्य में 'बुद्धि भरा मटका' नाम की कोई चीज भी थी ।

बीरबल बोले, ''बादशाह सलामत, श्रीलंका के राजा द्वारा की गई फरमाइश यानि 'बुद्धि भरा मटका' हाजिर है । क्या इस मटके से संबंधित एक आवश्यक बात मैं अपने माननीय अतिथि को बता सकता हूँ ?'' ''हाँ जरूर, बीरबल,'' बादशाह ने कहा ।

राजदूत की ओर देखकर बीरबल बोले, ''इस मटके में 'बुद्धि का फल' रखा है । यह फल मटके को तोड़े बिना या फल को काटे बिना बाहर निकालना होगा । 'बुद्धि का फल' निकालने के बाद आप यह मटका हमें वापस कर दें । लेकिन उसपर एक खरोंच भी नहीं लगनी चाहिए ।''

राजदूत ने कपड़ा हटाकर अंदर झाँककर देखा । मटके में एक बड़ा-सा कुम्हड़ा था । उस छोटे-से मुँहवाले मटके में कुम्हड़ा कैसे रखा गया ! और वह उस कुम्हड़े को मटके को तोड़े बिना या उसे काटे बिना बाहर कैसे निकालेगा ? राजदूत के पास कहने को शब्द नहीं थे । वह बीरबल की चतुराई से हार मान चुका था । उसने सम्मान पूर्वक बादशाह अकबर को सलाम किया और कहा, ''आपके इस उपहार ने मुझे कृतार्थ कर दिया । आपका राज्य बुद्धिमान लोगों से परिपूर्ण है और बीरबल उन सबमें अधिक बुद्धिमान हैं ।'' इन शब्दों के साथ राजदूत ने अपना 'बुद्धि भरा मटका' लेकर दरबार से विदा ली और श्रीलंका वापस चला गया ।

अब अकबर तथा उनके दरबारी सभी जानने को उत्सुक थे कि मटके में क्या था । बीरबल ने बाकी मटके दरबार में लाने का आदेश दिया और बादशाह अकबर तथा दरबारियों के सामने मटके पेश किए गए ।

जब बादशाह ने मटके के भीतर झाँककर देखा तो वे हँसते-हँसते लोटपोट हो गए । बादशाह बीरबल की बुद्धिमानी से बहुत प्रसन्न हुए और उन्हें बहुत से मूल्यवान उपहार दिए ।

❑ इस कहानी का कक्षा में नाट्यीकरण कराएँ । विद्यार्थियों को अपनी बुद्धिमानीवाले कोई कार्य बताने के लिए प्रेरित करें । तेनालीराम की कहानियाँ पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें । विद्यार्थियों से पूछें कि वे बीरबल की सूचनानुसार कुम्हड़ा कैसे बाहर निकालेंगे ?